'डाक पंजियन सं. Jaipur city/223/2015-17
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 21 अंक 8 4 जुलाई, 2017 कुल पृष्ठः 8 एक प्रतिः रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

शाखा के मैदान से

एक सह : संपद - भोजपुरा शाखा, गुजरात

हरसोलाव में मनाई बल्लुजी जयंती

अपनी वीरता, संकल्प शक्ति एवं वचन पालन के लिए मशहूर बल्लुजी चांपावत की 426वीं जयंती 26 जून को हरसोलाव में राव बल्लुजी चांपावत स्मृति एवं शोध संस्थान द्वारा समारोह पूर्वक मनाई गई। झींतड़ा महंत वासुदेवाचार्य, तारातरा महंत प्रतापपुरी, राजस्थान धरोहर संरक्षण एवं प्रोन्नति प्राधिकरण के अध्यक्ष औंकारसिंह लखावत, पूर्व सांसद गोपालसिंह ईड़वा, डॉ. लक्ष्मणसिंह राठौड़ आदि के आतिथ्य में आयोजित कार्यक्रम में राव बल्लुजी की मूर्ति का अनावरण किया गया। वक्ताओं ने बल्लूजी के जीवन का परिचय देते हुए उनसे प्रेरणा लेकर उनके सिद्धान्तों पर चलने का आह्वान किया।

➡ (शेष पृष्ठ 7 पर)

उद्वेलित हुआ समाज

24 जून को कुख्यात गेंगस्टर आनंदपालसिंह के एनकाउंटर को लेकर पनपी विभिन्न शंकाओं ने पूरे समाज को उद्वेलित किया। सरकार से शंकाओं के निराकरण हेतु विश्वसनीय एजेंसी से जांच की मांग की गई लेकिन समय रहते ऐसी घोषणा नहीं होने के कारण आक्रोश बढ़ता गया। सरकार की अनदेखी एवं उदासीनता ने आक्रोश को और बढ़ाया एवं पूरे प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में युवाओं द्वारा विरोध प्रदर्शन किए गए। सरकार द्वारा शव का जबरन अंतिम संस्कार किए जाने की धमकी ने समाज के सभी वर्गों को सोचने को मजबूर किया एवं साथ ही ये प्रश्न भी उठने लगे कि जब सब कुछ तय प्रक्रिया के तहत हुआ है तो सरकार सीबीआई जांच की मांग स्वीकार क्यों नहीं

करती? इन्हीं सभी प्रश्नों को लेकर प्रदेश के सभी सामाजिक संगठनों ने बैठक कर एक प्रेसवार्ता का आयोजन किया एवं सरकार से सभी मुद्दों को स्पष्ट करते हुए सीबीआई जांच की घोषणा की मांग की। साथ ही मुठभेड़ में घायल हुए कमांडो सोहनसिंह की योग्यतम चिकित्सकों से चिकित्सा करवाने तथा इस प्रकरण में पकड़े गए निर्दोष लोगों को रिहा करने की मांग की गई। एनकाउंटर के मामले में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा निर्धारित मापदंडों की पालना की भी मांग की गई। 29 जून को राजपूत सभा भवन जयपुर में पुनः बैठक रखी गई जिसमें राजपूत समाज एवं रावणा राजपूत समाज के संगठन शामिल हुए।

➡ (शेष पृष्ठ 7 पर)

आकांक्षा कंवर बनी युनिवर्सिटी टॉपर

संघ के भीनमाल सायला प्रांत के प्रांत प्रमुख नाहर सिंह जाखड़ी की सुपुत्री आकांक्षा कंवर देवड़ा स्वामी के शवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर में बी.एस.सी. ऑनर्स एग्रीकल्चर परीक्षा 2017 में प्रथम स्थान प्राप्त युनिवर्सिटी टॉपर बनी है। 24 जून 2017 को जारी मेरिट में छात्रा 8.3 ओजीपीए हासिल कर स्वर्ण पदक की हकदार बनी। छात्रा के पिता नाहरसिंह भी 1989 में इसी विश्वविद्यालय में बीएससी एग्रीकल्चर में टॉपर रहे एवं स्वर्ण पदक हासिल किया था। वर्तमान में वे कृषि विज्ञान केन्द्र केशवणा जालोर में सेवारत हैं।

शहादत का सम्मान : हुआ स्मारकों का अनावरण

विगत वर्ष कश्मीर में शहीद हुए जोधपुर जिले के खिरजां खास गांव के सपूत प्रभुसिंह के स्मारक मय मूर्ति का अनावरण 26 जून को केन्द्रीय विदेश राज्यमंत्री एवं पूर्व थलसेना अध्यक्ष जनरल वी.के. सिंह के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। जोधपुर सांसद गजेन्द्रसिंह शेखावत विशिष्ट अतिथि एवं विधायक बाबूसिंह कार्यक्रम अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे। ब्रिगेडियर महेन्द्रसिंह भटनागर, विधायक पब्बाराम विश्नोई सहित अनेक गणमान्य लोग भी

उपस्थित रहे। शहीद के पिता चंदनसिंह को भारती श्री सम्मान से नवाजा गया। वक्ताओं ने शहीद की शहादत से प्रेरणा लेकर राष्ट्र विरोधी ताकतों से संघर्ष करने का आह्वान किया। शेरगढ़ को वीरों की भूमि बताते हुए कहा कि यहां से आज भी 6 हजार से अधिक सैनिक देश की सेवा में सेवारत हैं एवं लगभग 8 हजार सेवानिवृत हो चुके हैं। उल्लेखनीय है कि 26 वर्षीय प्रभुसिंह 22 नवम्बर 2016 को कश्मीर के माछिल सेक्टर के कूपवाड़ा में शहीद हुए थे। विगत दिनों उनकी पत्नी ने एक बच्ची को जन्म दिया है। उधर जोधपुर की ही ओसियां तहसील के सामराऊ गांव स्थित सबलसिंह नगर में शहीद खींवसिंह भाटी की प्रतिमा का अनावरण किया गया जिसमें महंत समताराम जी, केन्द्रीय विधि राज्यमंत्री पी.पी. चौधरी, बीज निगम अध्यक्ष शंभुसिंह खेतासर आदि उपस्थित रहे। सांसद व विधायक ने गांव के विकास के लिए घोषणाएं की एवं शहीद की शहादत से प्रेरणा लेने की बात कही।

आरक्षण मुद्दे पर राजपूत समाज में एकता की आवश्यकता

गिरिराजसिंह लोटवाड़ा

सर्व सामाजिक संगठनों एवं राजपूत समाज के संगठनों ने सर्व सम्मति से आर्थिक पिछड़ा आरक्षण पर सरकार को नोटिस दिया कि अगर सरकार अविलम्ब कोई ठोस कार्रवाई नहीं करेगी तो 9 मार्च 2016 को विधानसभा का घेराव करेगी और इस दिशा में तैयारी के लिए प्रदेश के विभिन्न जिलों में तैयारी बैठकें होने लगी जिसमें अग्रणी भूमिका राजपूत समाज की संस्थाओं की थी। भारी जन-आंदोलन के दबाव में सरकार ने झुकने पर मजबूर होकर संघर्ष समिति को वार्ता के लिए आमंत्रित किया जिसमें दो दौर की वार्ता के पश्चात सरकार से लिखित सहमति बनी। जिसमें आर्थिक पिछड़ा आयोग गठन बाबत तीन काबीना मंत्रियों की हाई पावर्ड कमेटी का गठन व समय सीमा में रिपोर्ट देने के निर्देश और संविधान संशोधन हेतु बिल के साथ ही पारित संकल्प पत्र को केन्द्र को भेजने पर सहमति बनी। तत्पश्चात् ईबीसी आयोग गठन हुआ जिसने जनसंख्या व आर्थिक स्थिति के परिमाणात्मक आंकड़ों के लिए सर्वे हेतु एजेन्सी नियुक्त की जिसका कार्य चालू है। समाज कल्याण छात्रावासों में अनारक्षित आर्थिक पिछड़ों को 20 प्रतिशत सीट व छात्रवृत्तियां देने और 18 जिलों में आर्थिक पिछड़ों के लिए नए छात्रावास बनाने की घोषणा की। इसी दौरान आयोग से देवनारायण बोर्ड की तर्ज पर आर्थिक पिछड़ा वर्ग आयोग बनाकर 1000 करोड़ का प्रावधान करने पर बात हुई। ज्ञापन दिए गए तथा धीमी प्रगति पर विरोधात्मक प्रदर्शन हुए जो सभी अखबारों में प्रकाशित हुए अर्थात् इस पर काम हो रहा है और सारी बातें सार्वजनिक जानकारी में है। उपरोक्त आलेख का आशय यह है कि जब हम आर्थिक पिछड़ा आरक्षण मुद्दे पर अन्य समाज के सहयोग व सक्रियता से सफलता की ओर कुछ अग्रसर हो रहे हैं, अगर अब ऐसे समय पर हम पीछे हटने की बात करते हैं तो सरकार, प्रशासन व अन्य ब्राह्मण, वैश्य, कायस्थ आदि संबंधित जातियों में राजपूत समाज की वचनबद्धता और साख का क्या होगा। हम आगे होकर चुनावों से पहले आर्थिक पिछड़ा आरक्षण पर अधिक दबाव बनाने के लिए एकजुट हों तो परिणाम निश्चित रूप से मिल सकेगा। लेकिन अब अगर हमारे ही समाज के लोग विरोधाभासी मांगे करते हैं तो उक्त मुहिम तो कमजोर होगी ही, समाज की ओर से अन्य किसी भी अन्य मांग को सरकार-प्रशासन गंभीरता से नहीं लेगा। दुर्भाग्य से अति महत्त्वाकांक्षी लोग आरक्षण के मुद्दे का उपयोग समाजहित की जगह अपनी नेतागिरी चमकाने के लिए करना चाहते हैं और भिन्न मांग उठाने के लिए सक्रिय हो जाते हैं। नतीजन आरक्षण के मसले पर मांग बदलने से राजपूत समाज के मतभेद उजागर होने से जगहंसाई के अतिरिक्त कुछ भी हासिल नहीं होगा। हम कई विशेष मुद्दों पर एकजुट हुए हैं और विलक्षण सफलता पाई है जैसे राजेन्द्र राठौड़ प्रकरण हो या राजमहल प्रकरण। परन्तु यह भी कई दफा हो चुका है कि आरक्षण के मुद्दे पर सब इकट्ठे होकर सामूहिक निर्णय लेने के बाद भी लम्बे समय तक संगठित नहीं रहते और ज्यों ही चुनाव नजदीक आते हैं हम नई अलग मांग उठा कर जगह-जगह बैठकें करने लगते हैं अखबारों में बयानबाजी कर सुर्खियां बटोरने लगते हैं जो हमारी सामाजिक एकता के लिए अभिशाप सिद्ध होती है। इसे हमारी बड़ी विडम्बना या कमजोरी कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इसके प्रमुख कारण ये प्रतीत होते हैं :

1. सामाजिक संगठनों की बहुलता : अकेले जयपुर में 35 से अधिक संगठन हैं और प्रदेश की हर तहसील में एक-दो संस्था समाजहित में गठित है और सबकी अलग-अलग मांग और प्राथमिकताएं।
2. कुछ की मांग है आरक्षण मिलना चाहिए वह किसी भी वर्ग-कैटेगरी में हो।
3. कुछ कहते हैं आरक्षण खत्म होना चाहिए और कुछ का मानना है कि हमें आरक्षण मांगना ही नहीं चाहिए। हमें नीचा देखना पड़ता है इससे हमारे स्वाभिमान को ठेस पहुंचती है।
4. कोई संगठन केवल ओ.बी.सी. आरक्षण ही चाहता है और अन्य सभी को सिरे से नकारता है और उसका मानना है कि वे ही इस मसले के विशेषज्ञ-जानकार हैं दूसरे लोग अल्पज्ञ-दिग्भ्रमित हैं आदि-आदि।
5. कुछेक केवल लेटरपैड पर संस्था का नाम, अपना व कार्यकारिणी का नाम छपवा कर अपने हिसाब से समाज सेवा करते हैं।
6. राजनीतिक दलों से जुड़े हुए राजपूत नेताओं के अपनी निजी व दलगत स्वार्थ होते हैं वे कुछेक अपने नुमायंदों को उकसा कर समाज में फूट डलवाते हैं।
7. कुछेक व्यक्ति दर्जनों संस्थाओं के सदस्य बने हुए हैं लेकिन सामाजिक दायित्व के प्रति गंभीर नहीं है। सामूहिक निर्णय के खिलाफ सार्वजनिक बयानबाजी करते हैं।
8. सामाजिक अनुशासन का अभाव।

सोशल मीडिया में हमारे समाज के लोग एक दूसरे को नीचा दिखाने में लगे रहते हैं आए दिन व्हाटसअप पर उलटे सीधे कमेन्ट पढ़ने में आते हैं जब कि कई संगठनों ने इसका उपयोग नहीं करके भी देश ही नहीं विश्व स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। उदाहरणार्थ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जिसने देश को दो-दो प्रधानमंत्री दिए हैं लेकिन कभी सड़क पर आन्दोलन नहीं किया, कभी धरना-प्रदर्शन नहीं किया लेकिन अपने नेतृत्व के मार्गदर्शन से अपने विशिष्ट बुद्धि कौशल एवं वैचारिक एकता व संगठनात्मक शक्ति के बल पर देश पर अघोषित राज कर रही है।

➡ (शेष पृष्ठ 7 पर)

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

राजपूत विद्यालय चौपासनी

स्वरूपसिंह झिंझनियाली

चौपासनी स्कूल के जनक मारवाड़ के भूप सरप्रताप थे। सरप्रताप 1875 में जोधपुर के प्रधानमंत्री बने। उन्होंने जागीरदार ठाकुरों के बच्चों को पढ़ाने के लिए जोधपुर में एक स्कूल खोला। 1875 ठीक वही समय था जब अजमेर में राजपूताना के राजकुमारों को पढ़ाने के लिए मैयो कॉलेज की स्थापना की गई। 1876 में इस स्कूल को नोबल स्कूल नाम दिया गया। 1877 में इस स्कूल का नाम पश्चिमी राजपूताना के पॉलिटिकल एजेन्ट मि. पोलेट के नाम से पोलेट नोबल्स स्कूल कर दिया गया। 1899 में वायसराय ऑफ इण्डिया एल्गिन के नाम से इसका नया नाम एल्गिन राजपूत स्कूल कर दिया गया। 1912 में सर प्रताप के अथक प्रयासों से कर्नल विन्डम ने चौपासनी गांव में वर्तमान स्कूल भवन के लिए जगह चुनी। नवम्बर 1912 में चौपासनी स्कूल के भवन की नींव रखी गई। जोधपुर राज के खर्चे से चार लाख रुपए में शानदार भवन तैयार किया गया। 8 फरवरी 1914 जोधपुर महाराजा सुमेरसिंह की उपस्थिति में भारत के वायसराय लार्ड हार्डिंग के कर कमलों से चौपासनी स्कूल भवन का उद्घाटन किया गया। जोधपुर के लाल बलुआ पत्थरों से राजपूत स्थापत्य शैली का शानदार विद्यालय भवन बनाया गया। विद्यालय का नाम पोलेट नोबल्स एल्गिन राजपूत स्कूल चौपासनी जोधपुर रखा गया। स्कूल के मुख्य भवन के ऊपर मध्य भाग में सुन्दर मोनोग्राम बना कर लगाया जिस पर लिखा है 'रणबंका राठौड़।' अन्ततः यह स्कूल राजपूत स्कूल चौपासनी के नाम से विख्यात हुआ जिसने 2014 में अपने शानदार सफर के 100 वर्ष पूर्ण होने पर शताब्दी वर्ष के रूप में उत्सव मनाया। विद्यालय में हार्डिंग हाऊस, एल्गिन हाऊस, पोलेट हाऊस, सरप्रताप हाऊस और उम्मेद हाऊस (1939) के नाम से छात्रावास बने हैं। अगस्त 1915 में चौपासनी स्कूल का पहला वार्षिक उत्सव राजपूताना के ए.जी.जी. (एजेन्ट टू द गवर्नर जनरल) सर कोल्विन की अध्यक्षता में मनाया गया। सन् 1976 में विद्यालय की स्थापना की 75वीं वर्षगांठ भारत के राष्ट्रपति श्री फखरूद्दीन अली अहमद के मुख्य आतिथ्य में हरीक जयन्ती के रूप में मनाई गई। विद्यालय की स्थापना से लेकर आजादी तक लगभग सभी प्रिंसीपल विदेशी रहे। 1927 से लेकर 1947 बीस वर्षों तक न्यूजीलैण्ड के ए.पी. कॉक्स प्रिंसीपल रहे। यह विद्यालय का स्वर्णीम काल था। विद्यालय ने खूब नाम कमाया।

वायसराय लार्ड गौसचैन, भारत के अन्तिम गर्वनर जनरल लार्ड माउन्टबेटन, भारतीय सेना के पहले कमान्डर जनरल करियप्पा, भारत के पहले राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद ने इस विद्यालय का निरीक्षण किया। इस विद्यालय ने राजपूत विद्यार्थियों को शिक्षित कर राष्ट्र निर्माण में योगदान देने के लिए खूब सक्षम बनाया। यहां के शिक्षित छात्रों ने सांसद, विधायक, मंत्री, सेना, पुलिस, केन्द्रीय प्रशासनिक सेवाओं, राज्य सेवाओं, पेरा मिलिट्री सेवाएं, इंजीनियर, डॉक्टर, वकील, प्रोफेसर, व्यवसायी, समाजसेवी, चित्रकार, कवि, लेखक, खिलाड़ी आदि बनकर जाति समाज एवं राष्ट्र का नाम रोशन किया। प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटेन सरकार का सर्वोच्च बहादुरी पुरस्कार विक्टोरिया क्रास पाने वाले रिसालदार गोविंद सिंह राठौड़ एवं 1962 की चीन की लड़ाई में भारत का सर्वोच्च सेना पुरस्कार परमवीर चक्र पाने वाले मेजर शैतानसिंह भाटी (बानासर) इसी विद्यालय के विद्यार्थी रहे हैं। इसके अलावा यहां के विद्यार्थियों ने सेनाओं के बहादुरी के लिए दिए जाने वाले महावीर चक्र, वीरचक्र, अशोक चक्र, शौर्य चक्र, मिलिट्री क्रास विशिष्ट एवं अति विशिष्ट सेवा मेडल पुरस्कार के रूप में प्राप्त किए है। आई.जी. सुल्तानसिंह चौरड़िया को पुलिस पदक (राष्ट्रपति), पुलिस अधीक्षक नारायणसिंह भाटी को डाकू उन्मूलन के क्षेत्र में पद्म श्री मिला। महाराज प्रेमसिंह को पॉलो खेल के लिए अर्जुन पुरस्कार एवं रावराजा प्रो. करणसिंह को स्पोर्टस कोच का सर्वोच्च पुरस्कार दोर्णाचार्य मिला। प्रताप सिंह चन्देल (गोदरास) ने बास्केट बॉल में मास्को ओलम्पिक में भारत का प्रतिनिधित्व किया। ख्यातनाम मौसम विशेषज्ञ लक्ष्मणसिंह राठौड़ इस विद्यालय के विद्यार्थी रहे। सांसद, विधायक, राजस्थान विधानसभा के विपक्ष के नेता, महान समाजसेवी एवं विचारक तथा श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक श्री तनसिंह एवं शिक्षाविद्, समाज चिंतक, राजनेता तथा क्षत्रिय युवक संघ के द्वितीय संघ प्रमुख श्री आयुवान सिंह, राजपूत नेता एवं राजस्थान से केन्द्र सरकार में राजपूत के रूप में पहले केबीनेट मंत्री बनने वाले श्री कल्याणसिंह कालवी, पद्मश्री एवं पद्मभूषण तथा राज्यसभा के मनोनीत सांसद रहे डॉ. नारायण सिंह माणकलाव (श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक) तथा चौपासनी विद्यालय के विद्यार्थी रहे है। इस तरह चौपासनी का यह सरस्वती मंदिर शिक्षा के क्षेत्र में राजपूत समाज की पिछले सौ वर्षों से अधिक समय से सेवा करता आ रहा है। जिससे समाज ने हर क्षेत्र में ऊचाइयां पाई हैं। महाराजा सरप्रताप एवं चौपासनी विद्यालय का साधुवाद।

प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न

बिखरणिया

वर्मा नगर (गुजरात)

सत्र 2017-18 के शिविरों की श्रृंखला जून माह में प्रारम्भ हुई। 14 से 17 जून तक नागौर संभाग के बिखरणिया गांव में बालिका प्राथमिक प्रशिक्षण हुआ जिसमें जोधपुर, बिखरणिया, मथानिया, जसवंतपुरा, ईटावड़ा, भकरी, माण्डलजोधा, हरसाणी, बनवाड़ा, सथाना, नथावड़ी, गुड़ाजोधा, सुरियास आदि गांवों की बालिकाओं ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन महिला प्रकोष्ठ के राजस्थान प्रभारी जोरावरसिंह भादला के निर्देशन में उषा कंवर पाटोदा ने किया। स्वागत के समय शिविर संचालिका ने चारों पुरुषार्थों को हासिल करने में स्त्री की भूमिका के बारे में बताते हुए कहाकि संघ इस हेतु शिविर में अभ्यास करवा कर बालिकाओं को तैयार करता है। विदाई संदेश में निराश हुए बिना निरन्तर साधना की आवश्यकता बताई। उदयपुर संभाग के बेमला गांव में संघ का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 15 से 18 जून के बीच सम्पन्न हुआ जिसमें बेमला, बाठरड़ा, नवलसिंह का गुड़ा, जूड़, वाजनीरोडी, सेजलाई, भटवाड़ा, तलावदा, बैजनाथिया, दांतड़ा आदि गांवों के शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन किशनसिंह चूली ने जसवंतसिंह बुडीवाड़ा, विक्रमसिंह मूंगेरिया, मूलसिंह गिंगाला, भगतसिंह बेमला आदि के सहयोग से किया। संभाग प्रमुख भंवरसिंह बेमला पूरे शिविर में सहयोगी के रूप में उपस्थित रहे। विदाई के उपरान्त स्नेहमिलन रखा गया जिसमें दलपतसिंह गुडा केशरसिंह, मदनसिंह राणावत, संग्रामसिंह, मिठूसिंह थानाधिकारी, डॉ. कमलेन्द्रसिंह बेमला आदि ने अपने विचार रखें।

उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले के मोरना में 23 से 26 जून तक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ जिसका संचालन रेवतसिंह धीरा ने अपने साथियों सहित किया। शिविर संचालक ने स्वागत संदेश में कहा कि संघ तात्कालिक समस्याओं के निवारण मात्र का आंदोलन न होकर व्यक्ति के माध्यम से सामाजिक जीवन को श्रेष्ठता की ओर ले जाने की सतत साधना है। जोधपुर संभाग के भोपालगढ़ प्रांत में गादेरी गांव में 23 से 26 जून तक शिविर हुआ जिसमें भोपालगढ़ तहसील के गांवों के युवकों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन जोधपुर शहर प्रांत के प्रांत प्रमुख उम्मेदसिंह सेतरावा ने किया। जालोर संभाग के पाली प्रांत में रायपुर में 23 से 26 जून तक शिविर हुआ जिसमें शिविर संचालक शक्तिसिंह आशापुरा ने बताया कि संघ क्षत्रिय युवकों को शक्तिशाली, संयमी एवं संस्कारवान बनाने का मार्ग है ताकि वे क्षात्रधर्म का पालन करने हेतु स्वयं को तैयार कर सकें। प्रांत प्रमुख महोब्बतसिंह धींगाणा, बहादुरसिंह सारंगवास, शिवसिंह ढूंढ़ा, आदि ने संचालन में सहयोग किया। शिविर के अंतिम दिन विदाई के उपरान्त स्थानीय सहयोगियों का स्नेहमिलन संपन्न हुआ जिसमें केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा ने उपस्थित बंधुओं को संघ के उद्देश्य एवं कार्यप्रणाली के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

राजसमंद प्रांत में घोड़ाघाटी स्थान पर भी 23 से 26 जून तक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ जिसका संचालन उदयपुर संभाग प्रमुख भंवरसिंह बेमला ने किया। गोपालशरण सिंह सहाड़ा, फतेहसिंह भटवाड़ा, भगतसिंह बेमला, श्रवणसिंह बिजेरी, विक्रमसिंह मूंगेरिया आदि ने सहयोग किया। गुजरात के कच्छ प्रांत के वर्मानगर में भी इसी अवधि में शिविर हुआ जिसमें कोटियाणी छेर, कपूराशी, नरेड़ी, बालाघर, एकतानगर, सोनलनगर आदि गांवों के युवकों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन तनसिंह बिजावा ने किया। छेर की पीथल सेना समूह के 20 युवा सदस्य भी एक दिन शिविर में आए। गुजरात में ही अहमदाबाद ग्रामीण प्रांत के काणेटी में 24 से 26 जून तक शिविर हुआ जिसमें काणेटी, चेखला, पिंपण, खोड़ा, ददुका, पडुसमा आदि गांवों के युवकों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन योगेन्द्रसिंह काणेटी ने किया। स्वागत करते हुए शिविर संचालक ने शिविर के दौरान क्षात्रियों के स्वाभाविक गुणों को जागृत करने हेतु कराए जाने वाले अभ्यास में पूर्ण सहयोग देने का आह्वान किया। गुजरात के मोरचंद में भी 24 से 26 जून तक शिविर हुआ जिसका संचालन गुजरात के शाखा कार्यालय प्रभारी छनुभा पच्छेगांव ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों का स्वागत करते हुए कहा कि संघ जिस तत्व का हमारे में बीजारोपण करना चाहता है उसके लिए स्वानुसासन एवं स्वैच्छा से स्वीकारोक्ति आवश्यक है। इसके अभाव में संस्कार निर्माण संभव नहीं है। इस प्रकार जून माह में कुल 10 प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुए जिनमें 100 से अधिक गांवों के क्षत्रिय युवकों ने संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली द्वारा क्षात्रवृत्ति का अभ्यास किया।

रायपुर (पाली)

मोरना (उत्तरप्रदेश)

पांचोटा शाखा का अधिकतम संख्या दिवस

जालोर प्रांत की पांचोटा शाखा का अधिकतम संख्या दिवस 24 जून को सायं शाखा मैदान पर मनाया गया जिसमें शाखा में नियमित आने वाले स्वयंसेवकों के अतिरिक्त दक्षिण भारत में व्यवसायरत स्थानीय युवक भी शामिल हुए जो इस समय गांव आए हुए थे। उल्लेखनीय है कि पांचोटा गांव में लंबे समय से संघ की शाखा लगती है एवं गांव के अनेक युवकों ने संघ के शिविर किए हैं जो वर्तमान में गांव के बाहर व्यवसायरत हैं। ऐसे युवा एक विवाह समारोह में गांव आए हुए थे वे सभी सामूहिक शाखा में शामिल हुए। संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह देलदरी, सायला, भीनमाल प्रांत प्रमुख नाहरसिंह जाखड़ी, जालोर सह प्रांत प्रमुख जयसिंह आकोरापादर, मंडल प्रमुख खुशवंतसिंह असाड़ा, ईश्वरसिंह देसु, मदनसिंह थुम्बा आदि स्वयंसेवक भी शाखा में शामिल होने हेतु पांचोटा आए। संभाग प्रमुख ने शाखा की नियमितता एवं निरंतरता का महत्त्व बताया। शाखा प्रमुख सौभाग्यसिंह पांचोटा ने शाखा का नियमित कार्यक्रम सम्पन्न करवाया।

लक्ष्मणगढ़ में स्नेहमिलन

शेखावटी क्षेत्र में संघ कार्य के विस्तार को लेकर 24 जून की शाम को लक्ष्मणगढ स्थित मयूर पब्लिक स्कूल में लक्ष्मणगढ़ तहसील के सहयोगियों का एक स्नेहमिलन रखा गया। स्नेहमिलन में केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ ने बताया कि संघ का मूल कार्य क्षात्र धर्म के बीज का रक्षण करना है और इसके लिए संघ क्षत्रिय युवाओं को महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर तद्नुकूल आचरण का अभ्यास करवाता है। स्नेहमिलन में हुई अनौपचारिक चर्चा में बालसिंह पालड़ी, रघुवीरसिंह रोरु, गजेन्द्रसिंह, समदरसिंह फदनपुरा, सुरेन्द्रसिंह फदनपुरा, रतनसिंह छिंछास, होशियारसिंह ढोलास, शिशुपालसिंह बऊ, मनोहरसिंह दिसनाऊ, महेश सिंह बीदासर आदि ने भाग लेते हुए संघ की कार्यप्रणाली पर अपनी जिज्ञासाएं प्रकट की। केन्द्रीय कार्यकारी ने उनकी जिज्ञासाएं शांत की। शिविरों एवं स्नेहमिलनों के प्रस्ताव आए। स्नेहमिलन में सीकर से संभाग प्रमुख गौरीशंकर दीपपुरा एवं प्रांत प्रमुख जुगराजसिंह जुलियासर अपने साथियों सहित शामिल हुए।

संपादकीय

दलित कब होगा सामान्य?

जिस दिन राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन द्वारा बिहार के राज्यपाल रामनाथ कोविंद को राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार घोषित किया गया उसके दूसरे दिन सोशल मीडिया पर एक प्रश्न चला कि भारत के दलित सामान्य कब होंगे? निश्चित रूप से प्रश्न विचारणीय है कि वे कौनसे मापदंड हैं जो यह तय करें कि कोई व्यक्ति अब दलित नहीं बल्कि सामान्य माना जाएगा। आप जवाब दे सकते हैं कि जैसे आप क्षत्रिय के घर में जन्म कर क्षत्रिय ही बने रहते हैं वैसे ही दलित भी दलित के घर जन्म कर दलित ही रहेगा, वह सामान्य नहीं बनने वाला। यदि ऐसा ही है और जन्म के आधार पर ही दलित दलित ही रहने वाला है तो फिर उसे राष्ट्रपति क्यों बनाया जा रहा है? उसे दलित होने के नाते विशेषाधिकार देने के क्या मायने? आरक्षण की व्यवस्था का क्या अर्थ? यदि उसका दलित होना ही उसके विशेषाधिकार का कारण है और यह दलितपना हमेशा हमेशा के लिए रहना है तो फिर विशेषाधिकार देना बेकार की कवायद है? यह प्रश्न हर विचारशील व्यक्ति के मन में स्वाभाविक रूप से उठना चाहिए। यदि एक व्यक्ति भारत की सर्वोच्च प्रशासनिक सेवा में चयनित हुआ हो, फिर उसे छोड़कर जिसने वकालात की हो, जो भारत के प्रधानमंत्री का निजी सचिव रहा हो, जिस व्यक्ति ने 12 वर्ष तक लगातार भारतीय संसद के उच्च सदन की शोभा बढ़ाई हो और फिर जो महामहीम बनकर बिहार के राजभवन की रौनक बना हो और अब भारत के सर्वोच्च पद पर सुशोभित होने की तैयारी में हो और फिर भी दलित ही रहते हो तो फिर यह दलित पना मिटना नहीं है। फेसबुक पर एक पोस्ट आई की भाजपा वाले उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री की जाति बताने से परहेज करते हैं लेकिन राष्ट्रपति उम्मीदवार की जाति बताने के लिए बाकायदा प्रेस कांफ्रेंस करते हैं। क्या ये लक्षण भारत के सामाजिक परिदृश्य से दलित, पिछड़ा शब्दों को मिटाने की कवायद है या बनाए रखने की? एक सज्जन लिख रहे हैं कि भारत में नया युग आया है, मोदी जी भी पिछड़ जाति से और कोविंद भी पिछड़ी जाति से। विगत दिनों एक बड़े राज्य के मुख्यमंत्री जी का वक्तव्य आया कि वे और मोदी जी पिछड़ी जाति से हैं इसलिए इन उच्च पदों पर पहुंचे हैं। अब आपने यदि भाजपा को विगत लोकसभा चुनावों में वोट दिया तो क्या इसलिए दिया था कि मोदी जी घांची समाज से हैं? क्या उनकी राष्ट्रवादी छवि, निर्णय लेने की शक्ति एवं गुजरात में मुख्यमंत्री के रूप में लंबा कार्यकाल सभी उनके घांची होने के समक्ष बौना है? क्या उक्त मुख्यमंत्री जी केवल इसीलिए लगातार तीन बार मुख्यमंत्री हैं कि वे पिछड़ी जाति से हैं? निश्चित रूप से उत्तर ना में आएगा लेकिन क्यों कि राष्ट्रपति का पद किसी प्रत्यक्ष चुनाव के द्वारा नहीं भरा जाता बल्कि सत्ताधारी दल की मेहरबानी पर निर्भर करता है। राजनीतिक पार्टियों के विधायकों एवं सांसदों की संख्या के बल पर भरा जाता है ऐसे में राजनीतिक दल अपनी सुविधानुसार जनता की इच्छा की परवाह किए बिना अपने पार्टीगत लाभ-हानि के लिए इस पद का उपयोग करते हैं और यही इस बार भी किया जा रहा है। साथ ही इस बात को जोर-शोर से प्रचारित किया जा रहा है कि हम ऐसा कर रहे हैं। ऐसा लगता है कि दलित शब्द राजनीतिक फैशन बन गया है।

गली-मौहल्ले के छुट भैय्या नेताओं से लेकर भारत के प्रधानमंत्री तक सभी अपने आपको दलित हितेषी घोषित करने पर तुले हैं। जिस प्रकार समाजवाद के दौर में युवा लोग अपने आपको कामरेड कहलाना पसंद करते थे, चाहे उन्हें कामरेड का अर्थ पता नहीं हो उसी प्रकार आजकल दलित प्रेम भी एक फैशन बन गया है। लेकिन यह सब क्या उस विभाजन को दूर करने का सही उपाय है जो दुर्भाग्य से भारतीय समाज व्यवस्था का कलंक माना जाता रहा है? क्या यह सब उस विभाजन को और अधिक विकृत करने नहीं जा रहा? आज कतिपय राजनीतिक प्राणियों को छोड़ दें तो सामान्य वर्ग के शेष सभी लोगों में एक विशेष प्रकार की कुंठा पैदा होती जा रही है ऐसे में विभाजन मिटने की अपेक्षा बढ़ रहा है। सामाजिक समस्या का राजनीतिक उपाय कभी संभव नहीं है, समस्या यदि सामाजिक है तो उपाय भी समाज में ही ढूंढ़ना पड़ेगा और साथ ही इसमें किसी प्रकार जोर जबरदस्ती भी काम नहीं आने वाली। आजादी के बाद से लगातार सरकारी प्रयास जारी हैं लेकिन कितना फर्क पड़ा यह हम सबके सामने है। केवल सुविधाएं देने से, पद पर बिठाने से, आरक्षण देने से यह समस्या हल होती तो राष्ट्रपति उम्मीदवार की योग्यता के रूप में दलित होना आवश्यक नहीं माना जाता। यदि राष्ट्रपति बनने से ही समस्या का समाधान होता तो के.आर. नारायणन बने थे, मीरा कुमार लोकसभा अध्यक्ष भी बनी थी फिर दोबारा इस कार्ड को खेलने की आवश्यकता क्यों पड़ी? क्यों विपक्ष को भी दलित के सामने दलित ही उतारना पड़ा? तो वास्तव में राजनीतिज्ञ इस समस्या को हल करना नहीं चाहते बल्कि बनाए रखना चाहते हैं क्यों कि आजादी के बाद तथाकथित दलित समुदाय की यह विशेषता रही कि उन्होंने अपने आप को जाति के नाम पर मजबूत वोट बैंक के रूप में स्थापित किया और उनकी यह मजबूती हर राजनीतिक प्राणी को उनकी ओर आकर्षित करती है और इसीलिए छोटे से बड़ा हर राजनीतिज्ञ उन्हें साथ लेने की बात कहता है या कवायद करता है। इस प्रकार यह दलित प्रेम मात्र एक राजनीतिक फैशन है और कुछ नहीं। आजादी के तुरन्त बाद कांग्रेस के शासन में दलितों को विशेष सुविधाएं मिली तो वे स्वाभाविक रूप से कांग्रेस के वोट बैंक माने गए। कालांतर में बसपा जैसी पार्टियों को स्थानान्तरित हुए और आज भाजपा इनके तुष्टिकरण हेतु खूंटे तोड़कर इन्हें अपने पाले में करने का हर संभव प्रयास कर रही है। सभी पार्टियां अपने राजनीतिक प्रयास को सामाजिक सद्भाव का नाम दे रही है जबकि वास्तव में इस विभाजन को सामाजिक स्तर पर मिटाने के लिए जो गंभीर प्रयास होने चाहिए वे नगण्य से ही हैं। हम राजनीतिक पार्टियों के इस प्रकार के प्रयास से उद्वेलित होते हैं लेकिन उद्वेलन इसका उपाय नहीं बल्कि दलितों की तरह मजबूत वोट बैंक बनना ही एक मात्र उपाय है और इसी क्षेत्र में गंभीर प्रयास अपेक्षित हैं। साथ ही हमारे ईश्वरीय भाव को जागृत कर इस सामाजिक विभाजन पर चोट करना भी हमारा पुनीत कर्तव्य है।

माता-पिता की सीख की खातिर

मैंने ये पंक्तियां मेरे आसपास घटित हो रही आत्महत्या जैसी घृणित घटनाओं से प्रभावित होकर लिखी हैं। ज्यादा विचलित मैं तब हुई जब ऐसी दो-तीन घटनाएं मेरे करीबी जनों के साथ घटित हुई। उन्हीं को आधार बनाकर मैंने ये पंक्तियां लिखी हैं, इस उम्मीद के साथ कि शायद उनके तत्कालीन मानसिक द्वंद्वों और हृदय पीड़ा को एक प्रतिशत भी समझ कर व शाब्दिक रूप देकर सबके सामने प्रस्तुत कर सकूं। मैं नहीं जानती कि मैं अपनी बात को सभी लोगों तक पहुंचा सकूंगी या नहीं, पर मुझे इस बात की संतुष्टि होगी की मैंने अपना प्रयास जरूर किया। साथ ही मेरा यह प्रयास आत्महत्या जैसे घृणित कार्य को स्वीकृति देना नहीं है बल्कि एक मनःस्थिति का चित्रण मात्र है।

कह रही हूं आज, जो किसी से न कही,
बातें ऐसी बहुत सी, जो अनकही रह गई।
सोच रही हूं मैं, कहां से शुरू करूं,
अपने सम्पूर्ण जीवन को,
कैसे चंद लफ्जों में भरूं।।
बचपन बीतते देर न लगी,
उस वक्त को मैं रोक न सकी,
कुछ वर्षों बाद में हुई सयानी,
मां-पिता को भी दुनिया की रीत निभानी।।
आखिर वो घड़ी आ ही गई,
मां-पिता के घर से हुई मेरी विदाई।।
सास-ससुर को माता-पिता माना,
पति को परमेश्वर से कम नहीं जाना।
ननद-देवर में देखी, भाई-बहन की परछाई,
ऐसे ही सपने संजोए, नए घर में आई।।
बस! यही चाहत थी मन में,
मुझे भी आत्म सम्मान मिले,
अपने घर सा, मुझे यहां भी मान मिले।।
पर यह क्या?
मैं क्यों ज्वाला में भभक रही हूं,
या फिर मैं पानी में तड़प रही हूं।
जौहर तो पद्मिनी ने किया था,
उसने ख्याति पाई थी।
पद्म तालाब में देवल तड़पी थी,
वो भी स्वाभिमानी कहलाई थी।
पर यहां ना खिलजी का वार है,
ना चूंडा की तलवार है,
फिर किसे मैंने अपना शीश भेंट किया?
नहीं था मेरे लिए भी आसान,
क्योंकि पालने में झूल रही थी नन्हीं सी जान,
पर थी मैं भी क्षत्राणी, सर्वोपरि था स्वाभिमान,
जिसका पग-पग पर हो रहा था अपमान।।
जितना सह सकी सहन किया,
फिर एक दिन मैंने भी जहर पीया,
माता-पिता की दी हुई, विदाई की सीख याद आई
जिसकी कीमत मैंने, जान देकर चुकाई
कि अब वही तेरा परिवार है,
वही तेरा संसार है।
उनके खिलाफ कभी मत जाना,
उसी में हमारा मान है।
कैसे उनके खिलाफ जाती मैं,
कैसे अपने मां-पिता का दिल दुखाती मैं,
और फिर जीत भी जाती तो,
क्या समाज में वही सम्मान पाती?
पर मां आपने कैसे मेरी
आंखों का दर्द ना जाना?
पापा आपने क्यों मेरी,
हृदय की पीड़ा को ना पहचाना?
क्या आपको भी डर था अपमान का,
या समाज की झूठी शान का?
कायर नहीं थी मैं, क्योंकि क्षत्राणी थी,
पद्मिनी की तरह ही स्वाभिमानी थी।
जानती हूं बुजदिल कहलाऊंगी,
पर समाज में दर-दर की
ठोकरें तो नहीं खाऊंगी।।
क्योंकि उनके खिलाफ जाती,
तो बेहया इस समाज में मैं ही कहलाती,
और फिर कैसे मैं माता-पिता की
सीख को भुलाती?
सोचा था मेरे जाने के बाद
सबकी आंखें खुलेगी,
भविष्य में कहीं भी ऐसी एक
ओर कुर्बानी न होगी।।
पर यह क्या?
दो दिन बीते वो बात गई,
उसी घर में मेरी जगह नई बहू आई,
युगों से यही चला आ रहा है,
ना जाने कैसे वो इंसान समाज
से सम्मान पा रहा है?
जाने कितने अस्तित्व मिटे हैं,
और भी मिटते जाएंगे,
क्या कभी इसके जिम्मेदार लोग सजा पाएंगे?
बस आखिरी ख्वाहिश है,
मेरे बाद कोई इतना मजबूर ना हो,
अग्नि में भस्म किसी का नूर ना हो।

हेमलता आगोरिया (बाड़मेर)

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	प्रा.प्र.शि.	07.07.2017 से 10.07.2017 तक	डाबला (सीकर)। नीमका थाना से साधन उपलब्ध हैं।
2.	बाल शिविर	15.07.2017 से 16.07.2017 तक	भोपाल नोबल्स स्कूल, उदयपुर।
3.	शिक्षक शिविर	23.07.2017 से 23.07.2017 तक	महाराजा गजसिंह राजपूत छात्रावास ओसियां (जोधपुर)।
4.	प्रा.प्र.शि.	29.07.2017 से 31.07.2017 तक	राजपूत छात्रावास, वल्लभीपुर, गुजरात।
5.	प्रा.प्र.शि.	02.08.2017 से 04.08.2017 तक	शिवदानसिंह भोमिया का स्थान, अर्जुना (जैसलमेर)। रामगढ़ मोहनगढ़ मार्ग पर स्थित।
6.	प्रा.प्र.शि.	04.08.2017 से 06.08.2017 तक	जसपरा मोरचंद प्रांत गुजरात।
7.	प्रा.प्र.शि.	04.08.2017 से 07.08.2017 तक	राजपुरा (सीकर)। लोसल के साधन उपलब्ध।
8.	प्रा.प्र.शि.	04.08.2017 से 07.08.2017 तक	मेड़ी का मगरा, गिरिजासर जोधपुर। बाप, गिरिजासर, कोलायत से बस उपलब्ध।
9.	प्रा.प्र.शि.	04.08.2017 से 07.08.2017 तक	जय भवानी नगर, बासनी, जोधपुर।
10.	प्रा.प्र.शि.	04.08.2017 से 07.08.2017 तक	धीरपुरा केतु, जोधपुर। जोधपुर-जैसलमेर हाईवे पर फलोदी रोड फांटा के पास।
11.	प्रा.प्र.शि.	04.08.2017 से 07.08.2017 तक	आशापुरा फार्म हाउस, पचानवा (जालोर)। जालोर-तखतगढ़ मार्ग पर स्थित उम्मेदपुर से हरजी रोड पर 3 किमी दूर।
12.	प्रा.प्र.शि.	04.08.2017 से 07.08.2017 तक	दुर्गादास छात्रावास, पाली।
13.	प्रा.प्र.शि.	05.08.2017 से 08.08.2017 तक	तेजमालता (जैसलमेर)। जैसलमेर से प्रातः 9 बजे, अपराह्न 3 बजे व फतेहगढ़ से सायं 5 बजे बस उपलब्ध।
14.	प्रा.प्र.शि.	05.08.2017 से 08.08.2017 तक	मारूड़ी (बाड़मेर)।
15.	प्रा.प्र.शि.	05.08.2017 से 08.08.2017 तक	रानीवाड़ा (जालोर)। रानीवाड़ा-सांचौर बाईपास मार्ग पर सरिया देवी स्थल।

राजेन्द्रसिंह बोबासर, शिविर कार्यालय प्रमुख

डीडवाना में शिक्षक स्नेह सम्मेलन

नागौर जिले में कार्यरत क्षत्रिय शिक्षकों से संवाद कायम करने के लिए विगत वर्ष संघ के स्वयंसेवकों के प्रयास से लाडनूं में एक शिक्षक स्नेहमिलन रखा गया था। उसी समय इस प्रकार के स्नेहमिलन प्रत्येक तहसील स्तर पर रखने का निर्णय हुआ। उसी स्नेहमिलन के संदर्भ में नागौर के शिक्षकों का एक वाट्सअप समूह बनाया जो अनवरत जारी है। इसी समूह में चर्चा कर पुनः एक स्नेहमिलन रखने का तय किया और विगत 18 जून को डीडवाना स्थित वीर दुर्गादास राजपूत सभा भवन में स्नेहमिलन रखा गया जिसमें जिले की विभिन्न तहसीलों के क्षत्रिय शिक्षक शामिल हुए। डीडवाना उपखण्ड अधिकारी उत्तमसिंह शेखावत के आतिथ्य में आयोजित इस स्नेहमिलन में नरपतसिंह रताऊ, नरपतसिंह हुडास, संग्रामसिंह गिंगालिया, महेन्द्रसिंह गिगोली, शिम्भुसिंह आसरवा, विक्रमसिंह ढींगसरी, शिवसिंह रुणीजा, नरेन्द्रसिंह नगवाड़ा, मोतीसिंह रुणीजा, खींवराजसिंह छापड़ा, बजरंगसिंह मौलासर, राजेन्द्रसिंह खारड़िया, भरतसिंह बरड़वा आदि ने अपने विचार व्यक्त करते हुए शिक्षकों की समाज कार्यों में भूमिका, सामाजिक रूढ़ियों, संगठन, संस्कार निर्माण, शिक्षा, आरक्षण आदि विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए। अनेक वक्ताओं ने समाज की समस्याओं के स्थायी निराकरण में श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रयासों को सराहा। समारोह में 29 शिक्षकों ने अपने पुत्र का टीका नहीं लेने, 37 शिक्षकों ने मृत्यु भोज के निमित्त बने भोजन का सेवन नहीं करने एवं 67 बंधुओं ने शादी-विवाह आदि पारिवारिक समारोहों में शराब सेवन नहीं करने के लिखित में शपथ-पत्र भरकर दिए। मुख्य अतिथि उपखण्ड अधिकारी उत्तमसिंह ने विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से सामाजिक रूढ़ियों के कारण होने वाली हानि का जिक्र किया एवं शिक्षकों द्वारा इस दिशा में की जा रही पहल की सराहना की। साथ ही इस प्रयास को निरन्तर जारी रखने का आग्रह किया। अंत में आयोजन के व्यवस्थापक संपतसिंह जैसलान ने आभार प्रकट किया। स्नेहमिलन का संचालन डॉ. ईश्वरसिंह सांवराद एवं भरतसिंह बरड़वा ने किया। अंत में सभी ने स्नेहभोज का आनंद लिया।

सुमेरपुर में कॅरियर मार्गदर्शन हेतु बैठक

पाली जिले के सुमेरपुर कस्बे में 25 जून को एक दिवसीय कॅरियर मार्गदर्शन बैठक का आयोजन किया गया जिसमें दलपतसिंह गुडा केशरसिंह, परबतसिंह खिंदारागांव, अजयपालसिंह गुड़ा पृथ्वीराज, गजेन्द्रसिंह राणावत आदि ने विभिन्न क्षेत्रों में कॅरियर संबंधी संभावनाओं एवं तत्संबंधी तैयारी के बारे में बताया। तकनीकी के बढ़ते प्रयोग के कारण सदैव अद्यतन रहते हुए नवीनतम जानकारियों से अवगत रहने की आवश्यकता पर बल दिया गया। संघ के संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह देलदरी ने संघ की कार्य प्रणाली की जानकारी दी। गोड़वाड़ प्रांत प्रमुख हीरसिंह लोड़ता, सिरोही प्रांत प्रमुख सुमेरसिंह उथमण आदि स्वयंसेवक भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

महेसाणा प्रांत में कार्यकर्ता मिलन

गुजरात के महेसाणा प्रांत के कार्यकर्ताओं का एक मिलन कार्यक्रम प्रसिद्ध जैन तीर्थ तारंगाजी में 25 जून को संपन्न हुआ जिसमें विक्रमसिंह कमाणा, इन्द्रजीतसिंह जेतलवासणा, धर्मेन्द्रसिंह मोटीचंदूर, भागीरथसिंह डोभाड़ा, रणजीतसिंह नंदाली सहित अनेक स्वयंसेवकों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में संघ कार्य में तेजी लाने, सम्पर्क यात्रा, महिला स्नेहमिलन, शिविरों आदि को लेकर चर्चा की गई। दोपहर का भोजन सभी ने साथ में लिया एवं तदुपरांत पहाड़ी पर चढ़ाई का आनंद लिया।

श्री सद्गुरु भगवान छात्रावास एवं कोचिंग सेंटर

एसबीआई बैंक के सामने, डीडवाना रोड़, कुचामन सिटी, नागौर (राज.)

- कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थियों के आवास की सुंदर व्यवस्था
- अनुशासित एवं नियमित दिनचर्या
- पौष्टिक एवं सात्विक आहार
- कक्षा 6 से 12 तक कोचिंग सुविधा
- वरिष्ठ जनों का मार्गदर्शन

संपर्क सूत्रः नत्थुसिंह छापड़ा 7073305111, 9772097087

हार्दिक बधाई

प्रिय **जयदीपसिंह**

पुत्र महेन्द्रसिंह सोलंकी निवासी सेवाड़ा द्वारा इस वर्ष राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित दसवीं कक्षा की परीक्षा में **91** प्रतिशत अंक हासिल करने पर

हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं

शुभेच्छु : महेन्द्रसिंह पुत्र भीमसिंह सोलंकी, निवासी : सेवाड़ा जिला-नागौर।

हार्दिक बधाई

सीबीएसई द्वारा आयोजित कक्षा 10वीं की परीक्षा 2017 में 10 सीजीपीए हासिल करने पर

साक्षी कंवर चुण्डावत

व

घनश्याम सिंह चुण्डावत

को **हार्दिक बधाई** एवं **उज्ज्वल भविष्य** की **शुभकामनाएं।**

शुभेच्छु

बालूसिंह व कैलाश कंवर **(दादोसा व दादीसा)**, किशनसिंह व ज्योति कंवर **(कंवर सा व माताजी)** ठिकाना थाना (मेवाड़)। नाथूसिंह व भंवर कंवर **(नानोसा व नानीसा)** ठिकाना सांपणदा। विक्रमसिंह व अखिलेश कंवर **(मामोसा व मामीसा)** ठिकाना मोरसर

प्रतिभाएं

कुलदीपसिंह

जैसलमेर के सोनू गांव निवासी लालसिंह शारीरिक शिक्षक के पुत्र कुलदीप सिंह ने आरबीएसई की बारहवीं की परीक्षा में 96.40 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्र ने भौतिक विज्ञान में 100 में से 100 एवं गणित में 100 में से 99 अंक हासिल किए हैं।

कुमकुम कंवर

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक स्व. हरदानसिंह सिरसु की पौत्री एवं घनश्याम सिंह की पुत्री कुमकुम कंवर ने सीबीएसई की 10वीं कक्षा परीक्षा में 97 प्रतिशत अंक हासिल किए है।

जयदीपसिंह सेवाड़ा

जालोर जिले के सेवाड़ा गांव निवासी जयदीप सिंह पुत्र महेन्द्रसिंह ने आरबीएसई की दसवीं कक्षा की परीक्षा में 91 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

तोषिका कंवर करणोत

बाड़मेर जिले के रातड़ी के मूल निवासी एवं वर्तमान में आहोर में रह रहे महिपालसिंह करणोत की पुत्री तोषिका कंवर करणोत ने एम.बी.बी.एस. पात्रता परीक्षा नीट-2017 में 3051वीं रैंक हासिल की है। छात्रा अपने गांव की पहली डॉक्टर बनेगी।

महेन्द्रसिंह

जैसलमेर जिले के डांगरी गांव निवासी गिरधरसिंह के पुत्र महेन्द्रसिंह ने आरबीएसई की 12वीं कक्षा की परीक्षा में विज्ञान वर्ग में 90.60 प्रतिशत अंक हासिल किए है। छात्र ने बाड़मेर स्थित मोहन गुरुकुल छात्रावास में रहकर मयूर नोबल्स अकेडमी में अध्ययन किया है। छात्र ने संघ के 6 शिविर किए हैं।

प्रियंका कंवर

गांव आसलसर जिला चुरू के निवासी जितेन्द्रसिंह शेखावत की पुत्री प्रियंका कंवर शेखावत ने आरबीएसई की दसवीं कक्षा की परीक्षा में 85.87 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्रा ने सामाजिक विज्ञान विषय में 100 में से 97 अंक हासिल किए।

शिवदानसिंह

सीकर जिले के महरोली गांव के भगवानसिंह के पुत्र शिवदानसिंह ने सीबीएसई की 10वीं कक्षा की परीक्षा में 10 सीजीपीए अंक हासिल किए हैं।

भारतसिंह

बाड़मेर के झाख गांव निवासी भारतसिंह पुत्र स्वरूपसिंह ने आरबीएसई की 10वीं कक्षा की परीक्षा में 87.33 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्र ने संघ के 7 शिविर किए हैं एवं मोहन गुरुकुल छात्रावास बाड़मेर में रहकर अध्ययन किया है।

गजराज कंवर

नागौर जिले के तवरा गांव निवासी एवं वर्तमान में सीकर में रह रहे सुरेन्द्रसिंह राठौड़ की पुत्री गजराज कंवर ने आरबीएसई द्वारा आयोजित 10वीं कक्षा की परीक्षा में 86.33 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

गजेन्द्रसिंह

बाड़मेर जिले के रेवाड़ा जैतमाल गांव निवासी गजेन्द्रसिंह ने 10वीं कक्षा की परीक्षा में 85 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्र रेवाड़ा शाखा का नियमित स्वयंसेवक है।

करणसिंह

मेवाड़ के डाबियो का गुड़ा गांव के विक्रमसिंह के पुत्र करणसिंह ने इस वर्ष आरबीएसई की 10वीं कक्षा की परीक्षा में 82.17 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्र ने संघ के 4 प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर किए हैं।

साक्षी कंवर व घनश्याम सिंह

मेवाड़ के थाणा गांव निवासी कि शनसिंह चुण्डावत व ज्योति कंवर की पुत्री साक्षी कंवर चुण्डावत व पुत्र घनश्याम सिंह ने सीबीएसई द्वारा आयोजित 10वीं कक्षा की परीक्षा में 10 सीजीपीए हासिल किए हैं।

युवराजसिंह

बड़ी खेड़ी चुरु के मूल निवासी एवं वर्तमान में अजमेर में रह रहे हनुमानसिंह राठौड़ के पुत्र युवराजसिंह ने सीबीएसई की 10वीं कक्षा परीक्षा में 10 सीजीपीए हासिल किए हैं।

वंशिका कंवर

कुरथल टौंक के मूल निवासी एवं वर्तमान में आदर्श नगर अजमेर के निवासी भंवरसिंह खंगारोत की पुत्री वंशिका कंवर ने सीबीएसई की 10वीं कक्षा की परीक्षा में 10 सीजीपीए हासिल किए हैं।

मांडवी कंवर

जामोला निवासी योगेन्द्रसिंह की पुत्री मांडवी कंवर ने सीबीएसई की 10वीं कक्षा की परीक्षा में 10 सीजीपीए हासिल किए हैं। छात्रा का परिवार अजमेर में रहता है एवं माता आशा कंवर ने संघ के शिविर किए हैं।

पूनमसिंह

जैसलमेर जिले के डांगरी गांव निवासी पूनमसिंह पुत्र गिरधरसिंह ने आरबीएसई की 10वीं कक्षा की परीक्षा में 86.67 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्र ने मोहन गुरुकुल छात्रावास बाड़मेर में रहकर मयूर नोबल्स अकेडमी में अध्ययन किया हैं।

खारी बने मंडल महामंत्री

संघ के युवा स्वयंसेवक भाजपा नेता स्वरूपसिंह खारी को बाड़मेर के धोरीमन्ना मंडल में भारतीय जनता पार्टी का मंडल महामंत्री नियुक्त किया गया है। स्वरूपसिंह लंबे समय से पार्टी में सक्रिय हैं।

झापड़ावास में स्नेहमिलन

दौसा प्रांत के झापड़ावास गांव में 25 जून रविवार को संघ का स्नेहमिलन रखा गया जिसमें कारोली गढ़, राणौली, मोचीगपुरा, बाढ़, दांतली आदि गांवों के समाजबंधु शामिल हुए। प्रांत प्रमुख मदनसिंह बामण्या एवं सहयोगियों के प्रयास से संपन्न इस स्नेहमिलन में शिविर कार्यालय प्रमुख राजेन्द्रसिंह बोबासर ने संघ की कार्यप्रणाली के बारे में विस्तार से बताया एवं पूज्य तनसिंह जी के जीवन का परिचय देते हुए उनके विचारों को संघ किस प्रकार से मूर्त रूप दे रहा है इसकी जानकारी दी।

राव दूदा जयंती मनाई

राठौड़ों की मेड़तिया शाखा के आदि पुरुष एवं मीरा व जयमल के पितामह राव दूदा की 478वीं जयंती नागौर जिले के बूड़सु गांव में 15 जून को समारोह पूर्वक मनाई गई। भक्ति एवं शक्ति के समन्वित प्रतीक राव दूदा के जयंती समारोह को संबोधित करते हुए संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक एवं मकराना राजपूत परिषद के अध्यक्ष छोटूसिंह जाखली ने समाज में व्याप्त कुरीतियों को मिटाने का आह्वान किया। नांद पुष्कर से पधारे समताराम जी महाराज ने कहा कि कलियुग में संगठन के बिना आगे बढ़ना संभव नहीं है और श्री क्षत्रिय युवक संघ युवकों को संस्कारित कर संगठित करने का पुण्य कार्य कर रहा है जो प्रशंसनीय है। उन्होंने कहा कि राव दूदा भक्ति एवं शक्ति के पर्याय थे हमें उनके मार्ग पर चलना चाहिए। दौलतसिंह रावा, नरेन्द्रसिंह नगवाड़ा, हटुसिंह नगवाड़ा, मोहनसिंह जूसरी, रामसिंह जूसरी, ऐश्वर्या कंवर जाखली, बिंदुकंवर जाखली आदि ने भी इस अवसर पर अपनी बात कही। कार्यक्रम प्रातः 10 बजे हवन के साथ प्रारम्भ हुआ।

(पृष्ठ दो का शेष)

आरक्षण मुद्दे....

यह लिखने का तात्पर्य यह है कि केवल शारीरिक बल या अल्पकालिक आंदोलन से कुछ हासिल नहीं हो सकता बल्कि इसके लिए समसामयिक जटिलताओं की समझ रखने वाला दूरदर्शी नेतृत्व एवं विलक्षण बुद्धि कौशल से संगठनात्मक एकता की आवश्यकता है लेकिन इसके लिए निजी स्वार्थों को छोड़कर समाज हित में कार्य करना होगा।

एक ही जाति में संस्थाओं की बहुलता भी सामाजिक बिखराव का प्रतीक होता है। प्रजातंत्र में जातीयता दुधारी तलवार है जिस पर मौन या प्रदर्शन समय, स्थान व परिस्थितियों के अनुरूप विवेकशीलता से किए जाने की महत्ती आवश्यकता है अन्यथा विपरीत प्रतिक्रिया से घातक हानि होती है। जिसका दंश राजपूत समाज निरन्तर झेलता आ रहा है। इसी पीड़ा की अभिव्यक्ति व इसके निराकरण के प्रयास करना हम सबका दायित्व बनता है और मुझे हैरानी होती है कि समाज का संवेदनशील तबका क्यों नहीं मुखर हो रहा। समझदार-सक्षम लोग समाज के हित के प्रति अगर उदासीन बने रहते हैं तो यह सामाजिक पाप के समान है आखिर कोई समाज रूपी मां की उपेक्षा करके कितने दिन चैन से रह सकेगा।

हमारे जैसे जीवनभर सामाजिक सरोकार में प्रयासरत लोगों को आज के सामाजिक परिदृश्य में भारी हताशा होती है कि आखिर कैसे इस समस्या का निदान किया जाए? सदा से समाज के भविष्य के प्रति चिन्तन रखने वाले प्रबुद्धजनों से विनम्र अनुरोध रहा है कि सब चाहें तो आरक्षण जैसे जटिल मुद्दों पर समाज का एक वृहत्तर फैडरेशन का निर्माण हो जिसकी कोर कमेटी में प्रत्येक संगठन का अध्यक्ष या शीर्ष पदाधिकारी सदस्य हो, (दलगत राजनीति के लोग न हों) आवश्यकतानुसार नियमावली बनाई जाए व समस्त कार्रवाई लिखित में होकर अनुमोदित की जाए जिससे सब निर्णय के लिए बा-हस्ताक्षर पाबंद हों और अगर कोई सर्वसम्मत निर्णय के विपरीत आचरण करे तो उसे प्रतिबंधित किया जा सके। इस व्यवस्था में तीन प्रबुद्ध गुणीजनों को जांच अधिकारी नियुक्त किए जाने का प्रावधान रखा जा सकता है जो किसी संगठन से संबंधित नहीं हो, स्वतंत्र, सेवानिवृत्त न्यायाधीश या किसी भी क्षेत्र के हों उनका निर्णय सर्वमान्य होवे अन्यथा सामाजिक विघटन पर अंकुश लगाना असंभव होगा, ऐसा मेरा विनम्र मत है। मेरे अनुरोध का तात्पर्य केवल सामाजिक एकता की अवधारणा को सार्वजनिक रूप से सुदृढ़ व संगठित करने का विनम्र प्रयास है किसी व्यक्ति या संस्था के प्रति विरोध या दुर्भाव का नहीं है क्योंकि हम सभी एक ही उद्देश्य 'समाज हित' के प्रति संकल्पित हैं। अतः आशा है सद्भाव व सकारात्मक दृष्टिकोण से इस पर चिंतन-मंथन होगा। अब सारा मामला समाज की खुली पंचायत पर है वो जो भी निर्णय करे उसको सब पर अनिवार्यतः लागू किया जाना चाहिए।

हमें आशा है पाठकगण चिन्तन करके इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में सहयोग देंगे और अपने अमूल्य व्यवहारिक सुझावों से लाभान्वित करेंगे।

(गिरिराजसिंह लोटवाड़ा)
रघुकुल अपार्टमेन्ट, फ्लैट नं. एफ-2
प्लांट नम्बर 39-ए, उदयनगर, निर्माण नगर, जयपुर।

श्री राजपूत सभा संस्था सांचौर की बैठक

सांचौर स्थित राव बल्लुजी छात्रावास में 25 जून को श्री राजपूत सभा संस्था सांचौर की बैठक राव मोहनसिंह चितलवाना की अध्यक्षता में संपन्न हुई जिसमें समाज के विभिन्न मुद्दों पर चर्चा कर निर्णय लिया गया कि विवाह के समय दिन में शराब का सेवन पूर्णतया प्रतिबंधित रहेगा। ढूंढ आदि अवसरों पर होने वाली गोठ एवं शराब पार्टी की रूढ़ि को समाप्त करने का निर्णय लिया गया। मौत आदि के समय होने वाली बैठकों में डोडा, अफीम के उपयोग को प्रतिबंधित करते हुए अनावश्यक खर्च को रोकने की पहल की गई। राजपूतों द्वारा जमीन बेचने की प्रवृत्ति पर रोक लगाने के लिए निर्णय लिया गया कि जहां तक हो सके किसी को जमीन न बेचने दी जाए और बेचना आवश्यक हो तो भी अपने भाई व परिवार के लोगों को ही बेचें। शिक्षा के प्रति जागरुकता फैलाने के लिए कार्यक्रम बनाने पर जोर दिया गया एवं विवाह आदि में डीजे आदि साउण्ड सिस्टम को पूर्णतया प्रतिबंधित करने का निर्णय लिया गया। आपसी पारिवारिक विवादों का यथासंभव आपसी बातचीत द्वारा ही हल करने पर जोर दिया गया एवं वाट्सअप आदि सोशल मीडिया पर किसी अन्य समाज के प्रति कोई भी अनावश्यक टिप्पणी न करने का निर्णय लिया गया। बैठक में देवीसिंह सुराचंद, चंदनसिंह विरोल, कल्याणसिंह बावरला, हिन्दूसिंह दूठवा, महेन्द्रसिंह झाब, महेन्द्रसिंह कारोला, प्रेमसिंह अचलपुर, छैलसिंह जानवी सहित सैकड़ों समाजबंधु उपस्थित थे।

गिड़ा में कॅरियर गाईडेंस कार्यशाला

राजपूत युवा समिति गिड़ा के तत्वावधान में युवा कॅरियर गाईडेंस कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें कर्नल नारायणसिंह बेलवा ने सेना में चयन में आने वाली चुनौतियों को पार करने के गुर बताए। आई.टी.आई. कॉलेज के प्रोफेसर नरेन्द्रसिंह लोड़ता ने आई.टी.आई. कोर्स करने के बाद रोजगार के विभिन्न क्षेत्रों में क्या-क्या संभावनाएं हैं, इस पर विस्तृत जानकारी दी। भैरोसिंह बेलवा ने सकारात्मक सोच पर बल दिया। वहीं राजपूत युवा समिति गिड़ा के अध्यक्ष जब्बरसिंह गिड़ा ने व्यवसाय के क्षेत्र में संभावनाओं के बारे में बताया एवं प्रतिस्पर्धात्मक परिस्थितियों का किस प्रकार लाभ उठाया जा सकता है, इसकी जानकारी दी। युवाओं से संवाद का कार्यक्रम रखा गया जिसमें युवाओं ने अपनी शंकाओं का समाधान किया। इनके अलावा नरपतसिंह बस्तवा, नाथूसिंह बस्तवा, कालूसिंह बस्तवा आदि ने भी अपनी बात कही।

(पृष्ठ एक का शेष)

हरसोलाव में... अपने व्यक्तिगत जीवन को सामाजिक प्रतिष्ठा के अनुकूल बनाने का आह्वान करते हुए इस बात की सावधानी रखने की बात कही कि हमारा प्रत्येक कृत्य सामाजिक प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाला होना चाहिए। वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था में सभी वर्गों का विश्वास जीतकर युगानुकूल साधन अपनाने की बात भी कही गई। संस्थान के अध्यक्ष देवेन्द्रसिंह द्वारा प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का सम्मान किया गया। संचालन आईदानसिंह भाटी द्वारा किया गया।

उद्वेलित... वक्ताओं ने सरकार की हठधर्मिता के प्रति आक्रोश व्यक्त किया एवं 1 जुलाई को सभा भवन से सिविल लाइन्स तक मार्च करते हुए ज्ञापन देने का निर्णय हुआ। इसी बीच एडीजे कोर्ट चुरू ने पूरे मामले में सुप्रीम कोर्ट के एनकाउंटर संबंधी आदेश की पालना के निर्देश दिए है। हालांकि आंदोलन की तीव्रता एवं सभी के साथ आने से सरकारी स्तर पर कुछ हलचल प्रारम्भ हुई है लेकिन इस प्रकार जन आक्रोश को भड़काने के लिए जान बूझकर उदासीनता बरतना स्वच्छ परम्परा नहीं है। सरकार के ऐसे व्यवहार से अराजकता की भावना प्रोत्साहित होती है।

'राणा बल्लु जी पडिहार वंश प्रकाश' पुस्तक का विमोचन

बीकानेर के उदासर में विगत 22 जून को नारायणसिंह पड़िहार द्वारा रचित पुस्तक 'राणा बल्लुजी पड़िहार वंश प्रकाश' पुस्तक का विमोचन स्वामी संविद सोमगिरी जी, ब्रिगेडियर जगमालसिंह आदि के आतिथ्य में किया गया। स्वामीजी ने अधिकारों पर कर्त्तव्य को प्राथमिकता देने की क्षात्र परम्परा के निर्वहन का आह्वान किया। ब्रिगेडियर जगमालसिंह ने पड़िहारों एवं राठौड़ शासकों के संबंधों के बारे में बताया। वरिष्ठ स्वयंसेवक कानसिंह बोघेरा ने ले. जनरल चिमनसिंह द्वारा लिखित पत्र का वाचन किया। नारायणसिंह पड़िहार ने पुस्तक की सामग्री एवं उद्देश्यों के बारे में बताया। वरिष्ठ स्वयंसेवक बजरंगसिंह रॉयल ने क्षत्रिय सभा बीकानेर के चुनावों के बारे में चर्चा की। कार्यक्रम का संचालन दयालसिंह किशोरपुरा ने किया।

विद्यार्थियों को बांटी अभ्यास पुस्तिकाएं

गुजरात के धोलेरा गांव में विगत 13 जून को राजपूत विद्यार्थियों को निःशुल्क अभ्यास पुस्तिकाएं बांटी गई। संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा द्वारा 1965 में प्रारम्भ किया गया यह कार्य अनवरत जारी है। प्रारम्भ में अजीतसिंह फसल निकालने के समय समाज बंधुओं से अनाज इकट्ठा कर उसको बेचकर अभ्यास पुस्तिकाएं बांटते थे ताकि समाज में शिक्षा के महत्त्व को समझा जा सके। कालांतर में अनेक लोग इसमें सहयोग करने लगे। भारतसिंह, अर्जुनसिंह, रजुभा, प्रतापसिंह, विजयसिंह, जयपालसिंह आदि लगातार सहयोग करते रहे और विगत 32 वर्षों से यह कार्य नियमित जारी है। वर्तमान में जो सहयोग राशि एकत्र हुई उसके ब्याज से अभ्यास पुस्तिकाएं क्रय की जाती हैं।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
कृष्णा नगर-I, लालकोठी स्कीम, जयपुर
मो. 9636977490, 0141-4015747
website : www.springboardindia.org

उम्मेद ब्लॉक का लोकार्पण

डॉ. मोहनसिंह बारू द्वारा अपने पिता उम्मेदसिंह भाटी बारू की स्मृति में परमवीर मैजर शैतानसिंह राजपूत छात्रावास फलोदी में 25 लाख रुपए व्यय कर एक ब्लॉक बनाकर समर्पित किया है। उम्मेद ब्लॉक के नाम से पहचाने जाने वाले इस ब्लॉक का लोकार्पण 18 जून को तारातरा महंत प्रतापपुरी जी, विधायक पब्बाराम विश्नोई, विधायक शैतानसिंह सांकड़ा, पूर्व प्रधान आनंदसिंह बारू, फलोदी राजपूत समाज अध्यक्ष कूंभसिंह पातावत, हिम्मतसिंह आऊ आदि की उपस्थिति में किया गया। वक्ताओं ने डॉ. मोहनसिंह के इस पुनीत कार्य की सराहना करते हुए प्रेरणा लेने की बात कही।

जामोला (अजमेर) में समाज की बैठक

अजमेर जिले की मसूदा तहसील के जामोला गांव में 11 जून को स्थानीय राजपूत समाज की महिला-पुरुषों ने बैठक आयोजित कर मृत्यु भोज नहीं करने का संकल्प लिया। इस बैठक में अजमेर से विभिन्न सामाजिक संगठनों के कार्यकर्ता भी शामिल हुए। जामोला की श्रीमती आशा कंवर ने मृत्युपरांत अपनी देहदान की घोषणा की। इसी प्रकार की एक बैठक 14 मई को नसीराबाद तहसील के सनोद में रखी गई जिसमें मृत्युभोज सहित अन्य सामाजिक रुढ़ियों पर चर्चा की गई एवं गांव के सभी समाज बंधुओं ने मृत्युभोज न करने का संकल्प लिया।

संघ प्रमुख श्री का जैसलमेर प्रवास

बाड़मेर में आयोजित कार्य योजना शिविर के उपरान्त संघ प्रमुख श्री 12 जून को एक दिवसीय जैसलमेर प्रवास पर पहुंचे। जैसलमेर पहुंचने से पहले मार्ग में देवीकोट में स्थित राणी रुपादे संस्थान में स्थानीय ग्रामवासियों एवं स्कूल संचालकों से मिले। संघ प्रमुख श्री ने उपस्थित लोगों को कर्तव्यपालन के महत्त्व के बारे में बताया। स्कूल संचालक उगमसिंह लूणा संघ के अच्छे सहयोगी हैं एवं विद्यालय में बालिका शिविर का आयोजन करवाया है। तदुपरान्त संघ प्रमुख श्री जैसलमेर पहुंचे जहां स्थित प्रांतीय कार्यालय तनाश्रम में स्थानीय स्वयंसेवकों की बैठक ली। कार्यालय की व्यवस्था एवं संघ कार्य बाबत् चर्चा हुई। 13 जून को सायं जयपुर के लिए प्रस्थान किया।

'बीकानेर में क्षत्रिय परमार स्नेहमिलन'

अखिल भारतीय क्षत्रिय परमार महासंघ का चतुर्थ परमार राजपूत स्नेहमिलन विगत 17 जून को बीकानेर के राजपूत सभा भवन बीदासर हाउस में सम्पन्न हुआ। चक्रवर्ती सम्राट वीर विक्रमादित्य की प्रतिमा की पूजा-अर्चना से प्रारम्भ हुए समारोह में महासंघ के अध्यक्ष कर्नल शिशुपालसिंह ने मंचासीन महानुभावों एवं सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र में कार्य करने वाली उत्कृष्ट प्रतिभाओं का साफा, श्रीफल एवं शॉल भेंटकर बहुमान किया। राव चन्द्रवीरसिंह बिजौलिया एवं राव हरेन्द्रसिंह पंवार को तलवार भेंट की। संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक कानसिंह बोघेरा ने मंचस्थ महानुभावों को साहित्य भेंट किया। स्नेहमिलन समारोह को महंत प्रतापपुरी जी तारातरा, महंत समतारामजी नांद, महंत भक्त वत्सल शरण जी वशिष्ठ आश्रम आबू, राव चन्द्रवीरसिंह बिजौलिया, राव हरेन्द्रसिंह जगनेर, विधायक गिरिराजसिंह बाड़ी, बाघसिंह काबा, ब्रिगेडियर जगमालसिंह, व्यवसायी धर्मसिंह परमार, वीरेन्द्र प्रताप सिंह, रणवीरसिंह सोढ़ा आदि ने संबोधित किया। वक्ताओं ने स्वयं द्वारा पहल कर सामाजिक रुढ़ियों को त्यागने एवं शिक्षा को बढ़ाने की आवश्यकता बताई। सभी से समाज जागरण के इस पुनीत कार्य में स्वैच्छिक सहयोग का आह्वान किया। इस प्रकार के आयोजन की आवश्यकता पर बल देते हुए इसकी बार-बार पुनरावर्ती की कार्य योजना बनी। समारोह में मुख्य अतिथि बिजौलिया राव साहब द्वारा भाग्योदय डिफेंस अकेडमी के छात्र लोकेशसिंह का भारतीय सेना में अधिकारी पद पर चयन होने पर साफा पहनाकर सम्मानित किया। समारोह के पश्चात् स्नेहभोज एवं विचार गोष्ठी हुई। विचार गोष्ठी में श्री क्षत्रिय युवक संघ की कार्यप्रणाली पर विस्तार से चर्चा की गई एवं संघ कार्य में सहयोग देने की बात हुई। कार्यक्रम का संचालन महेन्द्रसिंह मिठड़िया व गणपतसिंह सोढ़ा ने किया।

।। सुसंस्कार ।। ।। उज्ज्वल भविष्य ।। ।। स्वअनुशासन ।।

श्री मोहन गुरुकुल हॉस्टल

परिणाम ही हमारी पहचान है।

स्थापना वर्ष 2007

प्रवेश प्रारंभ
कक्षा 3 से 12 वीं तक

"चाणक्य ने कहा - अपनी संतान को धन दो या नहीं दो, धन से पहले उत्तम संस्कार एवं उत्तम शिक्षा जरूर दें।

91.67 % वीरम सिंह मुलाना

90.17 % रोहित सिंह रांयपुर

87.33 % भरतसिंह झाख

सत्र 2016-17 कक्षा 10 वीं का परिणाम

1.	श्यामसिंह मेघा	93.00%	12.	श्रवणसिंह बालासर	69.83%
2.	वीरमसिंह मूलाना	91.67 %	13.	महेन्द्रसिंह सांकड़ा	69.17%
3.	रोहितसिंह रायपुर	90.17 %	14.	चैनसिंह शिव	68.00%
4.	भरतसिंह झाक	87.33%	15.	पूर्णसिंह राजमथाई	66.67%
5.	खेतसिंह जानसिंह की बेरी	90.00%	16.	महेन्द्रसिंह सैलोड़िया	66.50%
6.	दिग्विजयसिंह सुल्ताना	85.33%	17.	मालमसिंह मुंगेरिया	65.83%
7.	दशरथसिंह भियाड़	82.33%	18.	सग्रामसिंह ताणु रावजी	64.00%
8.	पूनमसिंह डांगरी	80.66%	19.	देवेन्द्रसिंह ऊगेरी	63.50%
9.	बजपालसिंह धारवी	76.50%	20.	रणवीरसिंह हरियाली	61.17%
10.	योगेशकुमार भिखोड़ाई	73.50%	21.	विक्रमसिंह बान्दरा	47.17%
11.	श्रवणसिंह गिराव	70.00%	22.	कल्याणसिंह सैलोड़िया	45.00%

93.00 % रतनसिंह निम्बा

91.20 % राजु दान इटादा

91.00 % महेन्द्र दान भियाड़

90.60 % महेन्द्रसिंह डांगरी

सत्र 2016-17 कक्षा 12 वीं का परिणाम

1.	रतनसिंह नीम्बा	93.00%	11.	सुमेरराम मुंगेरिया	80.00%
2.	राजूदान इटादा	91.20 %	12.	महेन्द्रकुमार आरंग	76.00%
3.	महेन्द्रदान भियाड़	91.00 %	13.	राजेन्द्रसिंह म्याजलार	75.00%
4.	महेन्द्रसिंह डांगरी	90.60%	14.	प्रदीपकुमार म्याजलार	74.20%
5.	उम्मेदसिंह नीम्बा	85.00%	15.	महेन्द्रसिंह लुणू	72.00%
6.	नेपालसिंह मेघा	83.00%	16.	कुशलसिंह सैलोडिया	68.00%
7.	दलपतदान आरंग	82.20%	17.	जसवंतसिंह हुरो का तला	62.75%
8.	श्रवणसिंह मिठड़ा	82.00%	18.	सवाईसिंह झाक	62.00%
9.	भवानीदान बालेवा	81.20%	19.	कल्याणसिंह आरंग	60.00%
10.	प्रेमदान आरंग	80.00%	20.	भवानीसिंह खारीया	55.00%

सम्पर्क सूत्र:- अशोक सिंह भीखसर 9982691010, 8003497505 गोपालसिंह बीजावल 9587240306

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org